Bhartiya Shodh Patrika
Volume-4, Issue-2 Quarterly (April 2023 to June 2023) ISSN- 2582-6824

शिक्षा में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना

डॉ. प्रकाश अमरावत
विभागाध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

शिक्षा को लेकर हमारे शिक्षाविदों, विचारकों, धर्माचार्यों, समाज सुधरकों ने सदैव चिंतन किया है। उनके विचार हर युग में प्रासंगिक रहेंगे। "शिक्षा (पाठ्य–प्रणाली) का मूल सिद्धांत लोगों को केवल सेवावृत्ति के योग्य बनाने का नहीं किंतु देशभक्त, सच्ची और स्वतंत्र उद्योगी प्रजा को बनाने का होना चाहिए।" यह विचार है हमारे महान क्रांतिकारी राजस्थान केसरी ठाकुर केसरीसिंह बारठ के, जो सच्चे देशभक्त थे। राष्ट्र निर्माण में बहुआयामी दृष्टिकोण के धनी बारठजी ने नैतिकता के साथ उद्योगी शिक्षा, भारतीय भाषा (संस्कृत) एवं संस्कृति की रक्षा पर अपने बहुमूल्य विचारों से समाज को जाग्रत किया। अपने नवयुवकों को समाज के उत्थान का दायित्व देने की बात कही, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि "सफेद बालों में नवीन ज्योति चमकती है।" अर्थात् पूर्वजों के अनुभवों को साझा करते हुए युवा पीढ़ी आधुनिकता की ओर आगे बढ़े तो अधिक सक्षमता आती है।

श्री अरविंद, जो महान राष्ट्रवादी विचारक, लेखक और कवि के रूप में समादृत रहे हैं, उनके विचारों में, "जिसे सबसे पहले प्राप्त करने का प्रयत्न होना चाहिए वह है शक्तिय शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, नैतिक शक्ति और इन सबसे बढ़कर है आध्यात्मिक शक्ति, जो अन्य शक्तियों का अखूट और अक्षय स्रोत है।" आज की शिक्षा में व्यक्ति का बौद्धिक विकास, शारीरिक विकास (शारीरिक शिक्षा के माध्यम से) तो संभव है, परंतु अध्यात्म और नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है। इनके बिना आज की शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित है। स्वर्ण कलश में प्रदूषित जल की भांति यह शिक्षा मजबूत और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकती।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में जीवन मूल्यों का उत्थान करना होना चाहिए। भारत के राष्ट्रपति और शिक्षाविद् सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा कि, "शिक्षा का अर्थ व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास होने से है। बालक का सर्वांगीण विकास और उसे आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है।" सर्वांगीण विकास के फलस्वरूप ही बालक संस्कारित, विचारवान, विवेकशील, विनम्र, चिंतनशील, सभ्य और सुसंस्कृत नागरिक बनेगा जो सभ्य राष्ट्र का निर्माता होगा। शिक्षा में संस्कार बहुत जरूरी हैं। ये किसी

विश्वविद्यालय में नहीं बल्कि माता–पिता के आचारण से मिलते हैं। इस दृष्टि से समाज के दानों वर्ग स्त्री और पुरुष में बिना कोई भेद किए शिक्षा देना अनिवार्य है। स्त्री शिक्षा को लेकर भी हमारे विचारकों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। यह बात हम सभी जानते हैं कि बालक की प्रथम गुरु 'माता' होती है। अपनी मातृभाषा में ही वह पहला शब्द "माँ" बोलता है। माँ शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। माता तो स्वयं एक पाठशाला है, शिक्षा का आगार है, जो जीवन मूल्यों, आदर्शों की व्यावहारिक शिक्षा से सर्वप्रथम पोषित करती है। स्वामी विवेकानंद ने स्त्री–शिक्षा पर अत्यंत बल देते हुए अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे। उनका कहना था कि, "भारत में स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्या बाई, मीरा बाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलाई गई परंपरा को आगे बढ़ा सकें।" उन्होंने आगे कहा कि "धर्म, शिक्षा, विज्ञान, गृहकार्य, स्वास्थ्य, शिशु पालन, पाक कला, सिलाई–कढ़ाई आदि विषयों का मर्म स्त्रियों को सिखाना चाहिए। साथ ही आधुनिक बौद्धिकता की तीन विशेषताएँ हैं– वैज्ञानिक, मानक व भौगोलिक अवधारणाएँ और ऐतिहासिक धरोहर। महिलाओं की बौद्धिक क्षमता इन तीन पक्षों की समस्या के समाधान में पुरुषों के समान हो तभी जीवन संचालन सजीव बन सकेगा।" हमारे महापुरुषों ने स्त्री–पुरुष में समानाधिकारों पर बल दिया। स्वामी विवेकानंद ने स्त्री–शिक्षा के साथ निर्णय की स्वतंत्रता पर बहुत बल दिया। उनका यह कथन महत्त्वपूर्ण है कि, "स्त्रियों को सुशिक्षित बनाओ, फिर वे स्वयं कहेंगी कि उन्हें किन सुधारों की आवश्यकता है। स्त्रियाँ अपनी पूर्ति स्वयं कर लेंगी।" आज स्त्रियाँ शिक्षित तो हैं पर सुशिक्षित कितनी हैं, इस पर विचार करना होगा। निर्णय की स्वतंत्रता ने उनको जो अधिकार दिए उससे कहीं वे अपने कर्तव्य तो नहीं भूल गई हैं? ये बातें उनकी शिक्षा के साथ जुड़ती हैं तो हम कैसे कहेंगे कि बालक की प्रथम पाठशाला 'माँ' होती है जिससे चरित्र निर्माण की शिक्षा मिलतो है? हम कैसे कहेंगे कि उनका वह प्रत्येक निर्णय स्वार्थरहित और कल्याणकारी होगा? आधुनिकता के जहर ने सब श्रेष्ठताओं को जो जीवनमूल्य है, लील लिया है।

हमारे देश में साक्षरता का प्रतिशत तो निश्चय ही बढ़ा है। स्त्री शिक्षा भी लगभग समानता तक जा रही है। हाँ, ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिलाएँ अशिक्षित हैं, किंतु बालिकाओं की शिक्षा का स्तर योजनाबद्ध आगे बढ़ता जा रहा है। लड़कियाँ हर क्षेत्र में आगे आई हैं परंतु क्या स्त्री होने का कर्तव्य भी वे पूर्णतः निभा पाती हैं? कई प्रश्न विचारणीय हैं। क्या साक्षरता के

साथ हम सुशिक्षित भी हुए हैं? राजस्थानी कहावत 'भणिया पण गुणिया कोनी' का अर्थ शिक्षा में गुणवत्ता से है। यहाँ व्यावहारिक व जीवनोपयोगी शिक्षा की बात है, जीवन निर्वाह की नहीं। यह चिंतन का विषय है कि आज की शिक्षा केवल अर्थोपार्जन का साधन बन गई है। उदरपूर्ति के लिए, जमाखोरी के साधन रूप शिक्षा से क्या उच्च आदर्शों वाले जीवन की उम्मीदें की जा सकती हैं? शिक्षा तो स्वयं 'सत्यं शिवं सुंदरम्' का मूर्त रूप है। शिक्षा में 'शिव' की अनुपस्थिति उसे 'शव' बना देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा कि, "समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। चरित्र के बिना शिक्षा और पवित्रता के बिना चरित्र व्यर्थ है।" कोरा ज्ञान वैसा ही है जैसा डॉ. मनोहर शर्मा ने अपनी रचना में कुछ ऐसे कहा है –

विद्याबळ पा तूं गरबायो, पण ज्ञान तेरो के गुण आयो।
पाणी मथ कुण इमरत पायो, झूठा ये सारा उडे झाग।
तू जाग–जाग ओ मिनख जाग!

आए दिन शिक्षित युवाओं द्वारा चौंकाने वाले कारनामों से लगता है कि हमारी शिक्षा संस्कारहीन है। सुसंस्कारों के अभाव में मानवीय मूल्य ध्वस्त होते जा रहे हैं। ज्ञान वही है जो सिद्ध हो, जिससे मानव का हित हो। कष्टों को बढ़ाने वाला ज्ञान मानवीय मूल्यों से रहित और विवेकहीन होगा। आज की सबसे बड़ी समस्या है युवा असंतोष, जो बेकारी, बेरोजगारी के कारण पनपी है, साथ ही अति महत्त्वाकांक्षा के कारण हमारे शिक्षित युवा मार्ग भटक रहे हैं। बालिकाओं के साथ होने वाले दुष्कर्मों की घटनाएँ, मानवीय मूल्यों को तार–तार करती जा रही हैं। हमारे महापुरुषों के उच्च विचार और वे सुभाषित वाक्य, वे उद्घो षणाएँ इतनी कमजोर बन गई है क्या?

मानव व्यवहार के लोक धरातल पर सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहिष्णुता, शील, सदाचार और लोकमंगल की भावना का समेकित रूप ही मानवीय मूल्यों का परिचायक है। ये जीवन मूल्य अध्यात्म से जुड़कर विश्व पटल पर मानवता के संवाहक बन विश्व बंधुत्व के पोषक बनते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम, सत्यमेव जयते, क्षमा वीरस्य भूषणम्, विद्या ददाति विनयम, अहिंसा परमो धर्म, अतिथि देवो भवः जैसे अनेक सुभाषित वाक्य हैं। ये बीज वाक्य हैं जो भारतीय जीवन मूल्यों को कालजयी और सार्वजनिक बनाते हैं। ये बीज रूप वाक्य हमें शिक्षा के माध्यम से सिखाए जाते हैं। इनकी सिद्धता के प्रमाण भी हमारे समाज व राष्ट्र को समर्पित व्यक्तियों के चरित्र में मिलते हैं। वचनबद्धता, कर्तव्य परायणता, त्याग, समर्पण, स्वामीभक्ति, राष्ट्रभक्ति के साथ क्षमावीरों,

युद्धवीरों, दानवीरों की गौरव गाथाओं से हमारा अतीत उज्ज्वल है। नवीन इतिहास रचने वालों की यहाँ कमी नहीं रही, फिर आज हम चिंतित क्यों हैं? हमारे समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, धर्माचार्यों का पूरा जीवन ही मानवीय मूल्यों का खजाना है। इसमें से यदि महर्षि अरविंदो और स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्रों को व्यावहारिक शिक्षा में उतार लिया जाए तो बहुत होगा। इनके उन्नत शिक्षा सिद्धांतों को अपना लिया जाए तो हमारा देश भारत फिर से विश्वगुरु बन सकता है, अन्यथा अतीत आँखों से ओझल हो जाएगा और भविष्य कल्पनातीत हो जाएगा। आधुनिकता, प्रगतिशीलता, विदेशी शिक्षा के जुनून ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को अर्थहीन बना दिया है। जीवन शैली में कृत्रिमता की होड़ लगी है। झूठे प्रलोभन और छलावों ने ग्रामीण जीवन में निराशा और हताशा का विष घोल दिया है। इस शिक्षा ने युवाओं में अपराधबोध को जन्म दिया है। आतंकवाद ने संवेदनाओं का कंठमोचन कर दिया है। राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध कवि कन्हैयालाल सेठिया की यह कविता, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत का गौरव गान है–

आ धरती गोरा घोरां, आ धरती मीठा मोरां री।
ई धरती से रुतबो ऊंचो, आ बात कैवे कूचो–कूचो।
तलवार उठी रण खेतां में, इतिहास मंड्योड़ो रेतां में।
पग–पग पर जागी जोत अठै, जीवण से मूंघी मौत अठै।

आज के शिक्षक वर्ग को चेतना होगा। हमारी शिक्षा मूल्य आधारित हो। इसके लिए भागीरथ प्रयत्नों की महती आवश्यकता है। बालकों, युवाओं में जीवन के बीज वाक्यों को व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ते हुए उनमें कौशल विकास करना होगा। हम इस बात से इनकार नहीं करते कि समय के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन होता है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है, परंतु अपनी सांस्कृतिक धरोहर, आधार या उसकी जड़ों को काटकर हम नये जीवन मूल्यों की बात नहीं कर सकते।

हमारी शिक्षा में आज भी जीवनमूल्यों का लोप तो नहीं है किंतु शिक्षण के समय विषयगत ज्ञान की प्रधानता के कारण वे गौण हो जाते हैं। हमारी प्रश्न–पत्र प्रणाली ही कुछ ऐसी है कि विषय का ज्ञान ही अनिवार्य बन जाता है। सैद्धांतिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक शिक्षा जो चरित्र निर्माण के लिए ही हो, का समावेश किया जाना चाहिए। परिवारों में संचार साधनों का स्वछंद प्रयोग भी युवाओं या किशोरों में असमय अपना दुष्प्रभाव डालते हैं। उनके कोमल मन पर ये संसाधन इतने प्रभावी बन जाते हैं कि नवीन अपराधों और

उच्छृंखलताओं को जन्म देते हैं। आम तौर पर हम सभी इसको जानते हैं और मानते भी हैं, फिर भी क्या हम इनके दुष्प्रभावों को रोकने के कारगर कदम उठा रहे हैं? हमें अपने घरों से ही इनके प्रयोग को बाधित करना होगा। गूगल, व्हाट्सएप, फेसबुक ज्ञान ने हमारे अक्षुण्ण और अमिट ज्ञान भंडार को क्षीण कर दिया है। शिक्षकों के लिए भी ये चुनौती बन गए हैं। गूगल पर सब–कुछ ज्ञान मिल जाता है, फिर विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों की आवश्यकता ही क्या रह जाती है? बचपन में सिखाया गया ज्ञान हमेशा स्मृति–पटल पर चिर रहता है। धीरे–धीरे हमारी स्मरण क्षमता कम होने लगती है। पर मोबाइल के प्रयोग ने हमारी स्मरण–क्षमता को लगभग समाप्त ही कर दिया है। इसके दुष्परिणामों से बचना होगा। शिक्षा में अभ्यास, बार–बार अभ्यास की उसी परंपरा को कायम रखना होगा। बालकों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षा वह आधार स्तंभ है जिस पर सुसभ्य जीवन रूपी महल खड़ा किया जा सकता है। वहीं चरित्र निर्माण का पहला अध्याय भी है। शिक्षा की सुनियोजित मूल्य आधारित रूपरेखा बनाकर शिक्षक उचित अवसर तलाश कर मनोरंजक रूप से बच्चों के मनोनुकूल सामग्री से उनमें समूल्यों की स्थापना कर सकता है। बाल प्रतियोगिताओं के माध्यम से, जिसमें देश के महापुरुषों, कर्णधारों की जीवनियों पर वाद–विवाद, निबंध या भाषण आयोजित किए जाएँ। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से बीज–रूप वाक्यों में किसी चरित्र नायक की कथा या गाथा से सिद्ध किया जाए। जीवन की उपदेशात्मक बातों पर इन नाटकों को किया जाए जिसमें संदेशवाहक के गुण हों। सुविचारों को स्लोगन रूप में प्रचारित किया जाए। सुविचारों को सार्वजनिक स्थानों पर लिखा जाए जिससे उनको बार–बार पढ़ने से चिंतन किया जा सके। हमारी पहली जरूरत है कि शिक्षा आत्मबल को जगाने वाली हो। आत्मनिर्भरता और आत्मिक विकास एक साथ हो। हमारे शिक्षक वर्ग को स्वयं चरित्रवान बनकर मानवीय मूल्यों को पुनस्थापित करना होगा। एक चरित्रवान शिक्षक ही मूल्य आधारित शिक्षा की जड़ें मजबूत कर सकता है। शिक्षा के अतिरिक्त इनकी पकड़ कहीं नहीं है। शिक्षा ही है जो राष्ट्र को सुसभ्य, सुसंस्कृत नागरिक दे सकती है। इसके लिए स्वयं में आत्मविश्वास जगाने की जरूरत है जिससे भावी पीढ़ी पर बदलते समय के प्रभाव से हताशा, निराशा व उदासीनता हावी न होने पाए। महान विचारक अरस्तू के शब्दों में, "शक्षा अच्छे समय का आभूषण और बुरे समय का सहारा होती है।" उन्होंने यह भी कहा कि, "किसी बात को स्वीकार न करने के बावजूद सुनने की हिम्मत रखना शिक्षित दिमाग की निशानी है।" अर्थात्

हमें पूर्ण आत्मविश्वास के साथ बिना किसी की परवाह किए प्रतिक्रिया के बिना कर्मवीर बनना होगा। कर्मठता से ज्ञान भी हार जाता है। मितभाषी होना भी ज्ञान की निशानी है। हमें कम शब्दों का प्रयोग करते हुए कर्म की ओर अग्रसर होना होगा। कथनी और करनी में समानता का व्यवहार हमारे चरित्र को देदीप्यमान करेगा। हमें अपने अधिकारों को प्राप्त करने से पूर्व कर्तव्य–पथ पर चलना होगा। ऐसो शिक्षा ही जीवनमूल्यों को स्थापित करेगी जो जीवन का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होगी। आत्मविश्वास, आत्मबोध, आत्मनिर्भरता, आत्मबल को लिये उस कर्मपथ के पथिक बनें जो सत्यं शिवं सुंदरम् हो।

अंत में सुमनेश जोशी के शब्दों को उद्धृत करना चाहूँगी–

कोई गावै गीत न गावै, उणर्ने कद अभिलासा।
मरण पंथ रा पंथी तो बस, करम करण रा प्यासा ।।

lanHkZ lwph

1. राजस्थान केसरी ठाकुर सिंह बारहठ, सं. सवाईसिंह धमोरा, 1976 ई.
2. ज्ञान ज्योति, स्मारिका व निर्देशिका, 2012
3. भारत जागो! विश्व जगाओ/ संकलनकर्त्री सुश्री निवेदिता भिड़े
4. स्वामी विवेकानंद का 'हे हिन्दू राष्ट्र उतिष्ठत! जाग्रत!' संकलनकर्ता एकनाथ रानडे, अनुवादक देवेन्द्रस्वरूप अग्रवाल
5. राजस्थान के कवि, प्रकाशक राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
6. राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अप्रैल, 2015 से सितम्बर, 2015 (संयुक्तांक)